IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

किशोर विद्यार्थियों की सामाजिक सक्षमता (सम्प्रेशण कौशल) पर उनके त्रिगुण व्यक्तित्व के प्रभाव का अध्ययन

डॉ. रजत कुमार जैन
प्राध्यापक (शिक्षा)
अपोलो कॉलेज, अंजोरा,
दुर्ग (छ.ग.)

डॉ. बनिता सिन्हा
सहायक प्राध्यापक (शिक्षा)
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
भिलाई (छ.ग.)

दीपमाला बंजारे
शोधार्थी (शिक्षा)

सारांश –

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के सामाजिक सक्षमता (सम्प्रेषण कौशल) पर उनके त्रिगुण व्यक्तित्व के प्रभाव का अध्ययन करना है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में दुर्ग जिले के तीन विकासखण्डों (दुर्ग, धमधा एवं पाटन) के ग्रामीण एवं शहरी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 600 विद्यार्थियों (छात्र एवं छात्राओं) का यादृच्छिक रूप से चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में उपकरण के रूप में सामाजिक सक्षमता के मापन हेतु डॉ. उपिंदर धर, डॉ. संतोष धर एवं डॉ. सपना पाराशर (2012) निर्मित सामाजिक दक्षता मापनी तथा त्रिगुण व्यक्तित्व मापन हेतु डॉ. लतिका शर्मा एवं पुनिता रानी (2013) द्वारा निर्मित व्यक्तित्व मूल्यांकन प्रोफाईल का प्रयोग किया गया है। चयनित विद्यार्थियों पर उपरोक्त उपकरण का प्रशासन करने उनके प्राप्तांक ज्ञात किये गये तथा परिकल्पनाओं के सत्यापन के लिए त्रिद्विश प्रसरण विश्लेषण का उपयोग तथा 3X2X2 अभिकल्प किया गया। प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम में त्रिगुण व्यक्तित्व का सम्प्रेषण कौशल पर सार्थक प्रभाव पाया गया तथा लिंग एवं क्षेत्र का सम्प्रेषण कौशल पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

किवर्ड : किशोर विद्यार्थी, सामाजिक सक्षमता, सम्प्रेशण कौशल, त्रिगुण व्यक्तित्व

प्रस्तावना –

"शिक्षा सबसे शक्तिशाली शस्त्र है जिसका उपयोग आप दुनिया को परिवर्तित करने हेतु कर सकते हैं।" शिक्षा वह माध्यम है जिसके जरिए हम संसार को परिवर्तित कर सकते हैं। यह हमें कमजोरियों को शक्ति में बदलने और नाकामयाबी को कामयाबी में बदलने में सहायक है। यह हमें उनके समाधान खोजने में मदद करती है। यह हमें किसी व्यक्ति की मानसिक क्षमता की वृद्धि करने में सहायता करती है जो बदले में व्यक्ति के सोचने के तरीके को बदल देती है। इसके परिणामस्वरूप सामाजिक संबंधों के पैटर्न में बदलाव होता है और इसलिए, यह समाज के बदलाव का कारण बन सकता है। शिक्षा का एक मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के दृष्टिकोण, विचार और जीवनशैली को परिवर्तित करना है।सामाजिक सक्षमता को एक बच्चे की अपने साथियों और वयस्कों के साथ सामाजिक संपर्क में शामिल होने की प्रभावशीलता के रूप में वर्णित किया जा सकता है। यह अन्य लोगों के साथ बातचीत करते समय बच्चे की भावनात्मक और नियामक दक्षताओं की व्यवहारिक अभिव्यक्ति है। सामाजिक क्षमता को एक ऐसे निर्माण के रूप में देखा जाना चाहिए जो विकास का प्रतीक है। समाज बड़े बच्चों के साथ अधिक सभ्य बातचीत की अपेक्षा करता है। विभिन्न प्रकार की सामाजिक अंतःक्रियाओं में प्रभावी होने के लिए बच्चों को सामाजिक क्षमता के अंतर्गत आने वाले विभिन्न कौशलों में महारत हासिल करने की आवश्यकता होती है, जैसे किसी सन्दर्भ में भाग लेना, सामाजिक समस्या को हल करना और भावनाओं का आदान प्रदान, (अ) अंतर्निहित कौशल, (ब) अन्तःक्रियात्मक संदर्भों, और (स) विकासात्मक पहलुओं के बारे में ज्ञान हासिल करना।

त्रिगुण व्यक्तित्व –

प्रत्येक व्यक्ति में कुछ विशेष गुण या विशेषताएं होती है जो दूसरे व्यक्ति में नहीं होतीं। इन्हीं गुणों एवं विशेषताओं के कारण ही प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे से भिन्न होता है। व्यक्ति के इन गुणों का समुच्चय ही व्यक्ति का व्यक्तित्व कहलाता है। व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति व्यक्ति के आचार–विचार, व्यवहार क्रियाओं एवं उसकी गतिविधियाँ होती हैं। व्यक्ति के आचरण व्यवहार में शारीरिक मानसिक, संवेगात्मक और सामाजिक गुणों का मिश्रण होता है जिसमें एकरूपता एवं व्यवस्था पाई जाती है। इस प्रकार व्यक्तित्व व्यक्ति के व्यवहार का समग्र गुण है। व्यक्ति के व्यक्तित्व का वर्गीकरण श्रीमद्भगवत गीता में प्रकृति के आधार पर तीन गुणों में किया गया है। संसार का प्रत्येक प्रदार्थ त्रिगुण से बना होता है। ये गुण है–सत्व, रज, तामस ये त्रिगुण भी आपस में भिन्न–भिन्न मात्राओ में मिलकर पदार्थ का निर्माण करते हैं। प्रत्येक मनुष्य के अंदर इन तीन गुणों (1. सात्विक, 2. राजसिक एवं 3. तामसिक) का समावेश होता है। किसी व्यक्ति में कोई विशेष गुण अधिक तो कोई गुण कम पाया जाता है।

संबंधित भाोध अध्ययन

नायक (2014) प्रस्तुत अध्ययन में स्कूली किशोरों के सामाजिक क्षमता पर विभिन्न जनसांख्यिकीय चर लिंग, आयु और सांस्कृतिक परिस्थिति (शहरी और ग्रामीण) के प्रभाव की जांच की गई। यह अध्ययन ओडिशा के 10 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों से प्रतिभागियों को यादृच्छिक रूप से 240 छात्र चुने गए। परिणामों से पता चला कि समान सांस्कृतिक वातावरण में महिला किशोरों ने समान आयु वर्ग के पुरुष किशोरों की तुलना में उच्च सामाजिक क्षमता अर्जित की। लड़कियों की समग्र सामाजिक क्षमता भी लड़कों की तुलना में अधिक पाई गई।

सुप्रिया (2014), यह अध्ययन में (पेरेंटिंग) अभिभावक व्यवहार शैली किशोरों की सामाजिक क्षमता से सम्बंधित है। जालंधर जिले से 300 किशोरों का न्यादर्श एकत्र किया गया था। परिणामों से ज्ञात हुआ कि किशोर छात्रों के बीच लिंग (लड़के और लड़कियाँ) के संबंध में सामाजिक क्षमता में सार्थक अंतर है, किशोर छात्रों के बीच उनके पालन–पोषण व्यवहार शैलियों के संबंध में सामाजिक क्षमता में सार्थक अंतर है।

गोयल (2015), के अध्ययन का उद्देश्य सीनियर सेकेंडरी स्कूल के छात्रों के सामाजिक कौशल का उनके लिंग, स्थानीयता और परिवार के प्रकार के संबंध में अध्ययन करना है। इस उद्देश्य के लिए सोनीपत जिले से 100 सीनियर सेकेंडरी स्कूल के छात्रों का एक नमूना चुना गया था। अध्ययन के परिणाम दर्शाते है कि लड़के व लड़कियों (लिंग) और शहरी व ग्रामीण (क्षेत्र) उच्चतर माध्यमिक स्कूल के छात्रों के सामाजिक कौशल में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। एकल और संयुक्त परिवार के उच्चतर माध्यमिक स्कूल के छात्रों के सामाजिक कौशल में भी सार्थक अंतर नहीं है।

सिंह (2016), के वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य सरल यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक के माध्यम से चुने गए 300 सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों (150 पुरुष छात्र और 150 महिला छात्र) के नमूने की शैक्षणिक उपलब्धि और सामाजिक क्षमता के बीच संबंधों की सीमा का पता लगाना है। अध्ययन में शैक्षणिक उपलब्धि और सामाजिक क्षमता के मध्य सकारात्मक संबंध पाया गया।

कटारिया (2017), के वर्तमान अध्ययन का मुख्य उद्देश्य सरकारी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की सामाजिक क्षमता और आत्मविश्वास के बीच संबंध का पता लगाना था। न्यादर्श पंजाब के लुधियाना जिले से यादृच्छिक रूप से विभिन्न सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 200 छात्र चुने गए। परिणामों से पता चला कि सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के आत्मविश्वास और सामाजिक क्षमता के बीच एक सार्थक संबंध है।

पीरजादा (2018), के शोध का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की सामाजिक क्षमता, आकांक्षा के स्तर और शैक्षणिक उपलब्धि का पता लगाना है। अध्ययन के आंकड़ो में जम्मू और कश्मीर के पुलवामा जिले के विभिन्न शैक्षिक क्षेत्रों के 324 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र (162 पुरुष और 162 महिला) शामिल थे जिसमें यह पाया गया है कि सामाजिक क्षमता, आकांक्षा के स्तर और शैक्षणिक उपलब्धि के विभिन्न चरों के बीच सकारात्मक संबंध हैं ।

गौर और मलिक (2018), का अध्ययन उच्चतर माध्यमिक छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि और सामाजिक क्षमता की जांच करता है। निष्कर्ष बततो है कि उच्चतर माध्यमिक छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि और सामाजिक क्षमता के बीच महत्वपूर्ण सकारात्मक संबंध था। उच्चतर माध्यमिक छात्रों के सामाजिक क्षमता स्तरों और शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अंतर पाया गया।

शैलजा सी वी (2018), का वर्तमान अध्ययन किशोर गृहों में रहने वाले माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की सामाजिक क्षमता की जांच करना है। अध्ययन के अनुसार किशोर गृहों के निवासियों में सामाजिक अनुकूलन कौशल की कमी पायी गयी जो कि संसाधनों एवं सहायता की कमी के कारण हो सकता है। अध्ययन में लड़के और लड़कियों, शहरी और ग्रामीण आबादी और किशोर गृहों के सरकारी, सहायता प्राप्त और निजी निवासियों के बीच सामाजिक क्षमता में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया।

बनर्जी (2019), ने सामाजिक व्यवहार और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंधों पर अध्ययन किया गया। परिणाम से पता चला कि शैक्षणिक उपलब्धि, सामाजिक व्यवहार से सकारात्मक रूप से संबंधित है।

ज्योति और देवी (2021), के वर्तमान अध्ययन उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के करियर विकल्पों और सामाजिक क्षमता की जांच करना तथा क्या करियर विकल्पों के क्षेत्र उनकी सामाजिक क्षमता के अंकों के साथ महत्वपूर्ण रूप से सह–संबंधित हैं। परिणाम से पता चला कि विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षा करियर के सबसे पसंदीदा विकल्प है और कृषि छात्रों के सबसे कम पसंदीदा विकल्प थे। यह भी पता चला कि कैरियर विकल्पों और सामाजिक क्षमता के बीच सकारात्मक और सार्थक संबंध मौजूद है।

थॉमस और गॉडविन (2022), अध्ययन का उद्देश्य केरल में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता का विश्लेषण करना था। परिणामों ने संकेत दिया कि लगभग पचास प्रतिशत छात्र (41%) बेहद अस्थिर' स्थिति में थे। भावनात्मक परिपक्वता के स्तर में लड़कियों और लड़कों के बीच अंतर महत्वपूर्ण नहीं था, लेकिन लड़कियों ने लड़कों की तुलना में अधिक भावनात्मक परिपक्वता दिखाई।

अध्ययन की आव□यकता –

बच्चों में सामाजिक मूल्य को बढ़ाने और विकसित करने हेतु, अपनी संस्कृति के प्रति ईमानदार और समर्पित रहने के लिए। बच्चों की सोच में समयानुसार लचीलापन और देखभाल की प्रवृत्ति, ये ऐसे कौशल हैं जिन्हें हमें बच्चों को विभिन्न बातचीत और स्थितियों के माध्यम से ही विकसित होने देना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त बच्चे एक सकारात्मक आत्म–पहचान विकसित करें। स्वयं को पहचानने बच्चों को एक अच्छा सकारात्मक दृष्टिकोण देने ताकि वे अपने भविष्य के रिश्तों और अपने शैक्षणिक करियर में सफल हो सकें। बच्चों में बेहतरीन पारस्परिक कौशल हों। हम चाहते हैं कि वे दूसरे लोगों के साथ घुल–मिल सकें,

संघर्ष समाधान में अपनी समस्याओं को सुलझाने, पारस्परिक कौशलों को विकसित करना, बच्चों में आत्म–नियंत्रण हेतु, अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने और प्रलोभनों का विरोध कर सकें। बच्चे बदले में कुछ पाने की अपेक्षा किए बिना दूसरों के प्रति दयालुतापूर्ण कार्य करने में सक्षम हों। वे बच्चों द्वारा योजना बनाने और निर्णय लेने की क्षमता विकसित करना चाहते हैं। हमें सामाजिक सक्षमता की आवश्यकता वयस्क दुनिया में सफल संबंध विकसित करने और स्वयं की अस्तित्व के जानकारी देकर आजीवन सफलता के लिए तैयार करना और सामाजिक संपर्कों को प्रभावी ढंग से संभालने की क्षमता विकसित करने से है।

अतः इन सभी समस्याओं के समाधान और इन समस्याओं को बेहतर तरीके से समझने हेतु शाधार्थी द्वारा उपरोक्त विषय का चयन किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य –

- किशोर विद्यार्थियों की सामाजिक सक्षमता के आयाम सम्प्रेषण कौशल पर त्रिगुण व्यक्तित्व (सात्विक, राजसिक एवं तामसिक), लिंग एवं क्षेत्र का मुख्य एवं अन्तः क्रियात्मक प्रभाव का अध्ययन करना।

अनुसंधान विधि –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में उद्देश्य के परिणाम प्राप्त करने हेतु परिकल्पना के परीक्षण के लिए आँकड़ों का एकत्रण करने के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन की परिसीमा –

यह अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग जिले तक ही परिसीमित है। इस शोध कार्य हेतु तीन विकासखण्डों में दुर्ग, धमधा एवं पाटन से 600 विद्यार्थियों तक परिसीमित किया गया है। यह शोध अध्ययन 11वीं एवं 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों तक परिसीमित है। इस शोध अध्ययन में धार्मिक, सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि के आधार पर किसी तरह का भेदभाव नहीं किया गया है।

न्यादर्श –

अध्ययन में परिकल्पनाओं के सत्यापन के लिए दुर्ग जिले के तीन विकासखण्डों (दुर्ग, धमधा एवं पाटन) के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 600 विद्यार्थियों (छात्र एवं छात्राओं) का चयन गैर अनुपातिक यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेशण –

शून्य परिकल्पना से प्राप्त प्रदत्तों को विश्लेषण मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन तथा सार्थकता ज्ञात करने हेतु सह–संबंध का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पना परिणाम व विश्लेशण –

प्रस्तुत शोध की समस्या दुर्ग जिले उच्चतर माध्यमिक विद्यालय से प्राप्त आंकड़ों की व्याख्या विश्लेषण एवं निष्कर्ष हेतु परिकल्पना का सत्यापन किया गया।

परिकल्पना –

H_{01} -

किशोर विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता के आयाम सम्प्रेषण कौशल पर त्रिगुण व्यक्तित्व (सात्विक, राजसिक एवं तामसिक), लिंग एवं क्षेत्र का मुख्य एवं अन्तः क्रियात्मक सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

सामाजिक सक्षमता पर त्रिगुण व्यक्तित्व (सत्व, रजस एवं तमस), लिंग एवं क्षेत्र का मुख्य एवं अन्तःक्रियात्मक प्रभाव ज्ञात करने के लिये भी 3X2X2 त्रिदिश प्रसरण विश्लेषण की गणना कर प्राप्त परिणामों को प्रसरण विश्लेषण की सारांश तालिका क्रमांक 1.1 में प्रस्तुत किया गया है–

तालिका क्रमांक 1.1

किशोर विद्यार्थियों की सामाजिक सक्षमता के आयाम संप्रेषण कौशल पर उनके त्रिगुण व्यक्तित्व, लिंग एवं क्षेत्र के प्रभाव के लिए त्रिद्विश विश्लेषण का सारांश

विचरण के स्त्रोत	वर्गों का योग	स्वतंत्रता का अंश	वर्गों का मध्यमान	एफ मूल्य
त्रिगुण व्यक्तित्व (सात्विक, राजसिक, तामसिक)	5775.887	2	2887.943	80.23**
लिंग	185.976	1	185.976	5.16**
क्षेत्र	205.242	1	205.242	5.70**
त्रिगुण व्यक्तित्व X लिंग	11.285	2	5.642	.157•
त्रिगुण व्यक्तित्व X क्षेत्र	791.004	2	395.502	10.98**
लिंग X क्षेत्र	288.268	1	288.268	8.00**
त्रिगुण व्यक्तित्व X लिंग X क्षेत्र	531.643	2	265.821	7.38**

समूह के अंतर्गत (त्रुटि)	15514.145	431	35.996	
कुल	698101.000	443		
संसोधित योग	23517.774	442		
** सार्थकता स्तर = .005, ● = सार्थक नही				

मुख्य प्रभाव

त्रिगुण व्यक्तित्व का प्रभाव

तालिका क्रमांक 1.2

सामाजिक सक्षमता (सम्प्रेशण कौ□ाल) पर कि□ाोर विद्यार्थियों के त्रिगुण व्यक्तित्व का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन

त्रिगुण व्यक्तित्व	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिकविचलन
सात्विक	145	33.86	7.10
राजसिक	150	42.34	5.80
तामसिक	148	40.70	5.99

आरेख क्रमांक – 1.1

सामाजिक सक्षमता (सम्प्रेशण कौ□ाल) पर कि□ाोर विद्यार्थियों के त्रिगुण व्यक्तित्व का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन का आरेख

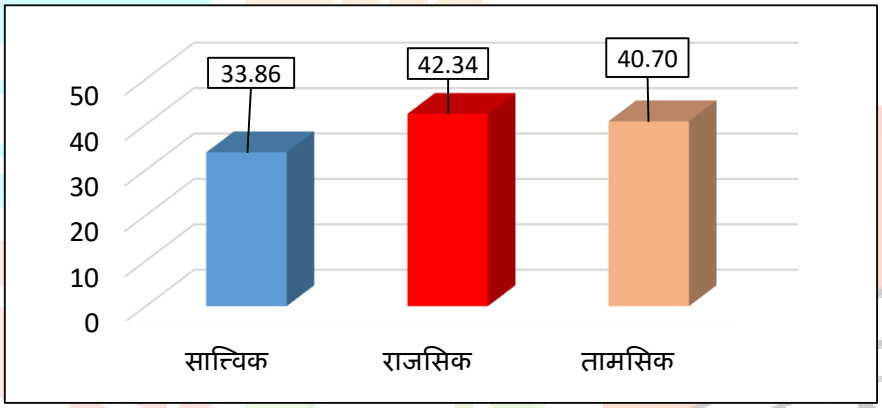

यह परिणाम पाया गया कि व्यक्तित्व (सात्विक, राजसिक और तामसिक) का संप्रेषण कौशल पर सार्थक प्रभाव पाया गया जिसका एफ मूल्य = 80.23 (2,431) पाया गया। जो सार्थकता स्तर 0.05 = 3.02 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है। सभी व्यक्तित्वों में राजसिक का मध्यमान M = 42.34 अन्य व्यक्तित्वों से अधिक तामसिक के मध्यमान M = 40.70 तथा सात्विक के मध्यमान M = 33.86, से अधिक पाया गया जो यह दर्शाता है कि राजसिकों का संप्रेषण कौशल बहुत अधिक प्रभावी होता है। इसके पीछे शायद यह तर्क दिया जा सकता है कि राजसिक में उतावलापन, तेजी, गति, तत्परता, त्वरित निर्णय लेने के लक्षण होते हैं। जो उन्हें सबसे श्रेष्ठ सिद्ध करने का गुण उत्पन्न करता है और इस छवि को बनाए रखने हेतु वे ज्यादा सार्थक, मौखिक एवं लिखित संप्रेषण करते हैं। जबकि तामसिक प्रभावशाली और तेजतर्रार दृष्टिकोण वाले, जिद्दी, घमंडी, और उतावले स्वभाव के होते हैं, अतः उनका सम्प्रेषण कौशल राजसिक से कम प्रभावशाली होता है। इसके अतिरिक्त सात्विक समझदार, सहानुभूतिशील, परोपकारी होते हैं, मृदुभाषी, सौम्य, मिलनसार, सरल और सीधे होते हैं तथा शांत स्वभाव के होते हैं और अल्पभाषी होते हैं जिसके कारण उनका संप्रेषण सबसे कम होता है।

लिंग का प्रभाव

तालिका क्रमांक 1.3

सामाजिक सक्षमता (सम्प्रेशण कौ□ाल) पर छात्र एवं छात्राओं के त्रिगुण व्यक्तित्व का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन

लिंग	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन
छात्रा	223	38.28	7.40
छात्र	220	39.77	7.11

आरेख क्रमांक 1.2

सामाजिक सक्षमता (सम्प्रेशण कौ□ाल) पर छात्र एवं छात्राओं के त्रिगुण व्यक्तित्व का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन का आरेख

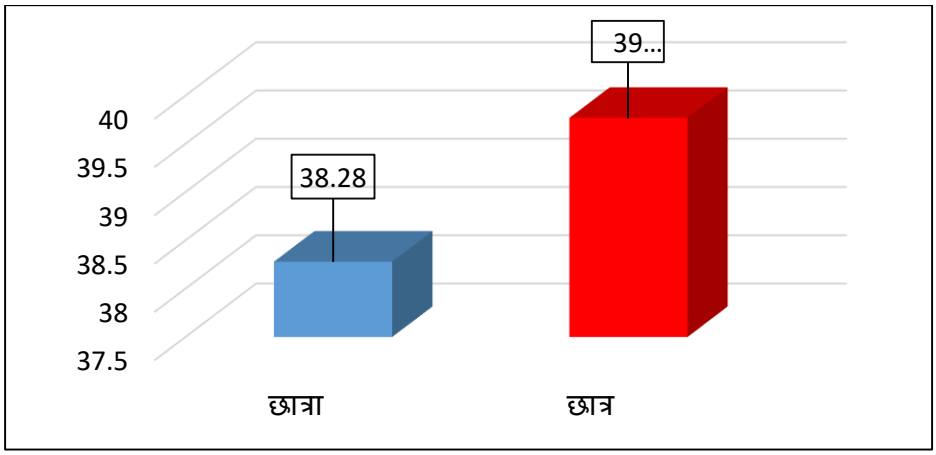

यह परिणाम पाया गया कि लिंग (छात्रा और छात्र) का संप्रेषण कौशल पर सार्थक प्रभाव पाया गया जिसका एफ मूल्य = 5.16 (1,431) पाया गया। जो सार्थकता स्तर 0.05 = 3.86 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है। परिणाम के अनुसार छात्रों में सम्प्रेषण कौशल का मध्यमान M=39.77 है तथा छात्राओं का मध्यमान M = 32.28 है, से ज्यादा पाया गया। तर्कानुसार यह कहा जा सकता है कि छात्रों में श्रेष्ठ होने की जिज्ञासा बहुत अधिक होती है कुशल संप्रेषण द्वारा वे सबके चहेते बनना पसंद करते हैं, अपना वर्चस्व स्थापित करना चाहते हैं अतः संप्रेषण द्वारा में वे ज्यादा प्रभाव डालने का प्रयत्न करते हैं। जबकि शूटन (2023) ने समीक्षा में यह तथ्य उजागर किया कि जो छात्र अधिक बहिर्मुखी होते हैं और ज्यादा सम्प्रेषण कर दूसरों के साथ सामाजिक रूप से जुड़ने का और अपने आपको पुनः उर्जावान अनुभव करते हैं। वहीं अहिरराव (2023) ने अपने शोध परिणाम में लिंग का संप्रेषण कौशल पर अंतर नहीं पाया।

क्षेत्र का प्रभाव

तलिका क्रमाक 1.4

छात्र एवं छात्राओं के त्रिगुण व्यक्तित्व का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन

क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन
ग्रामीण	220	39.72	6.56
शहरी	223	38.33	7.90

आरेख क्रमांक – 1.3

छात्र एवं छात्राओं के त्रिगुण व्यक्तित्व का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन का आरेख

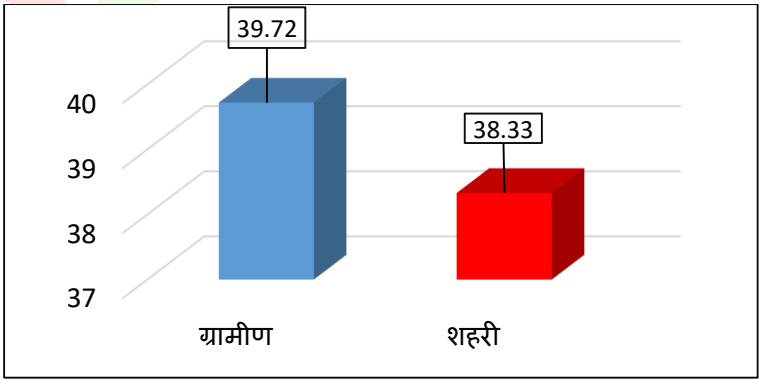

यह परिणाम पाया गया कि क्षेत्र (ग्रामीण एवं शहरी) का संप्रेषण कौशल पर सार्थक प्रभाव पाया गया जिसका एफ मूल्य = 5.70 (1,431) पाया गया जो सार्थकता स्तर 0.05 = 3.86 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है। परिणाम के अनुसार ग्रामीण विद्यार्थियों मे सम्प्रेषण कौशल का मध्यमान M = 39.72 है तथा शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान M=38.33 है, से अधिक पाया गया। इसका अर्थ है कि ग्रामीण संप्रेषण कौशल में शहरी विद्यार्थियों से ज्यादा निपुण हैं इसका संभावित कारण उनके परिवारिक सांस्कृतिक सामाजिक संबंध हैं जिससे वे लगातार ज्यादा प्रभावशाली संप्रेषण करते हैं और उनमें माहिर होते जाते हैं वही शहरी विद्यार्थी स्वार्थपरता और अवसरवादिता जैसे दुर्गुण के शिकार हो निष्पक्ष संचार नहीं कर पाते और पिछड़ जाते हैं। जबकि इसके विपरीत गायत्री देवी (2019) ने अपने शोध में पाया कि ग्रामीण क्षेत्र के युवा संचार और सार्वजनिक संप्रेषण

कौशल में प्रवीण नहीं हैं, इसलिए वे अच्छे व्यवसाय बाजार में आने के लिए संघर्ष करते हैं। जबकि शहरों में अधिक व्यस्त चर्या और रहन–सहन के कारण सम्प्रेषण की अधिकता होती है साथ ही वे उनमें कौशल की कमी नहीं होती।

अन्तःक्रियात्मक प्रभाव

त्रिगुण व्यक्तित्व X लिंग का प्रभाव

परिणाम के अनुसार व्यक्तित्व एवं लिंग के मध्य सार्थक अन्तःक्रिया नहीं पायी गयी। अतः निर्मित शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है। अन्तःक्रिया न हो पाने का कारण विभिन्न व्यक्तित्व का नकारात्मक प्रभाव अथवा विभिन्न लिंग का सार्थक संप्रेषण कौसल के प्रति उदासीन रवैया हो सकता है। अतः परिणामस्वरुप उपरोक्त परिणाम आया है।

त्रिगुण व्यक्तित्व X क्षेत्र का प्रभाव

तालिका क्रमांक 1.5

ग्रामीण एवं भाहरी कि ोर विद्यार्थियों के त्रिगुण व्यक्तित्व का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन

त्रिगुण व्यक्तित्त्व	क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन
सात्विक	ग्रामीण	71	35.92	6.56
	शहरी	74	31.87	7.07
राजसिक	ग्रामीण	73	43.60	5.06
	शहरी	77	41.15	6.23
तामसिक	ग्रामीण	76	39.53	5.71
	शहरी	72	41.94	6.08

आरेख क्रमांक – 1.4

ग्रामीण एवं भाहरी कि ोर विद्यार्थियों के त्रिगुण व्यक्तित्व का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन का रेखीय आरेख

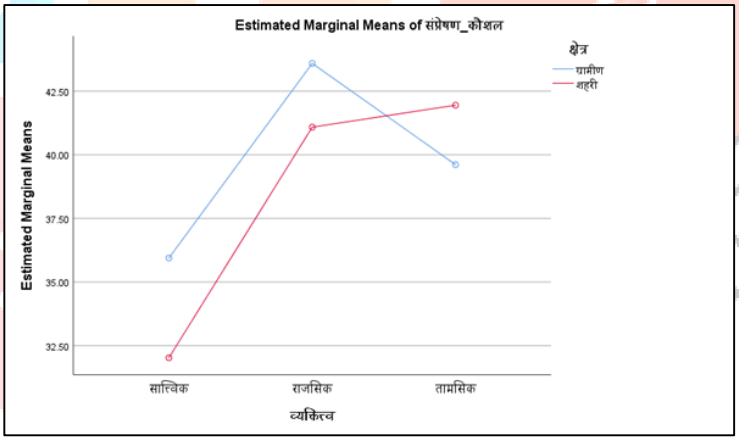

यह परिणाम पाया गया कि क्षेत्र (ग्रामीण एवं शहरी) का संप्रेषण कौशल पर सार्थक प्रभाव पाया गया जिसका एफ मूल्य = 10.98 (2,431) पाया गया। जो सार्थकता स्तर 0.05 = 3.02 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है। प्रस्तुत परिणाम में तामसिक ग्रामीण और तामसिक शहरी विद्यार्थियों के मध्य अन्तःक्रिया पायी गयी। इसके पीछे का कारण यह हो सकता है कि सात्विक और राजसिक जिन सम्बन्धों को मजबूत बनाए रखते हैं वे तामसिक अपने परवाह गुण के कारण उन सम्बन्धों का उचित ध्यान नहीं रखते, जबकि शहरी विद्यार्थियों की सफलता की कुंजी मधुर और दृढ़ और सार्थक सम्बन्धों पर निर्भर करता है अतः वे भी लगातार प्रयास करते हैं। तामसिकों का स्वभाव हठी भी होता है अतः वे जो ठान लेते हैं वे करके दिखाते हैं चाहे जब भी मौका मिले। अतः जब तामसिक ग्रामीण निम्न स्थिति की और बढ़ते हैं तब तामसिक शहरी अपनी मेहनत से उनको उपस्थिति को पार कर जाते हैं जिसके परिणाम स्वरुप निम्न परिणाम प्रस्तुत हुआ है।

लिंग X क्षेत्र का प्रभाव

तालिका क्रमांक 1.6

ग्रामीण एवं भाहरी कि□ाोर छात्र व छात्राओं के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन

लिंग	क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन
छात्रा	शहरी	74	32.91	7.17
छात्र	ग्रामीण	71	34.84	6.93
छात्रा	शहरी	77	41.15	6.23
छात्र	ग्रामीण	73	43.60	5.06
छात्रा	शहरी	72	41.94	6.08
छात्र	ग्रामीण	76	39.53	5.71

आरेख क्रमांक – 1.5

ग्रामीण एवं भाहरी कि□ाोर छात्र व छात्राओं के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन का रेखीय आरेख

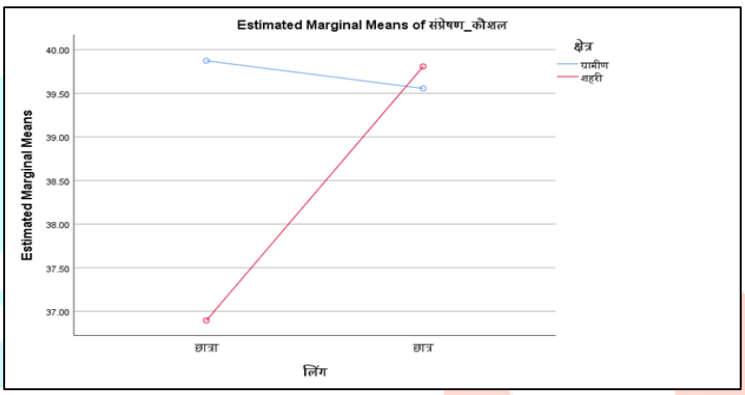

यह परिणाम पाया गया कि क्षेत्र (ग्रामीण एवं शहरी) का संप्रेषण कौशल पर सार्थक प्रभाव पाया गया जिसका एफ मूल्य = 8.00 (1,431) पाया गया। जो सार्थकता स्तर 0.05 = 3.02 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है। ग्राफ के अनुसार यह निष्कर्ष निकाल जा सकता है कि तामसिक अपने स्वभाववश इस क्रिया में भागीदार होते हैं साथ ही साथ छात्रों में आपस(ग्रामीण और शहरी) दोनों कहीं न कहीं आपस में संप्रेषण की जरूरत भी पढ़ती है, चाहे वह किसी भी सन्दर्भ में हो अतः अन्तःक्रिया सफल हो पाती है।

त्रिगुण व्यक्तित्व X लिंग X क्षेत्र का प्रभाव

तालिका क्रमांक 1.7

ग्रामीण एवं भाहरी कि□ाोर छात्र एवं छात्राओं के त्रिगुण व्यक्तित्व का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन

त्रिगुण व्यक्तित्व	लिंग	क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन
सात्विक	छात्रा	ग्रामीण	35	36.88	6.78
		शहरी	39	29.35	5.49
	छात्र	ग्रामीण	36	35.00	6.29
		शहरी	35	34.68	7.62
राजसिक	छात्रा	ग्रामीण	37	44.45	4.29
		शहरी	37	39.27	6.57
	छात्र	ग्रामीण	36	42.72	5.67
		शहरी	40	42.90	5.41
तामसिक	छात्रा	ग्रामीण	40	38.27	5.52
		शहरी	35	42.05	5.26
	छात्र	ग्रामीण	36	40.94	5.65
		शहरी	37	41.83	6.84

आरेख क्रमांक 1.6

ग्रामीण किशोर छात्र एवं छात्राओं के त्रिगुण व्यक्तित्व का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन का रेखीय आरेख

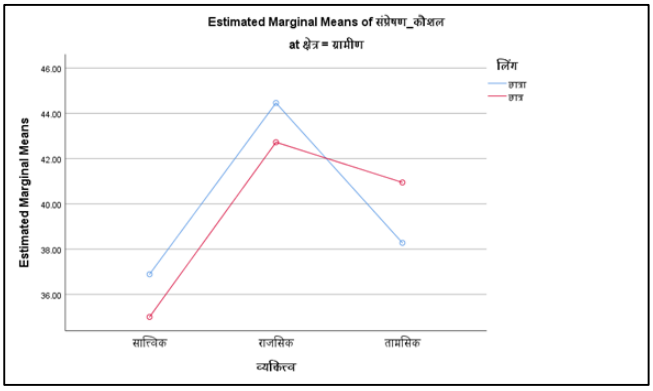

आरेख क्रमांक – 1.7

भाहरी किशोर छात्र एवं छात्राओं के त्रिगुण व्यक्तित्व का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन का रेखीय आरेख

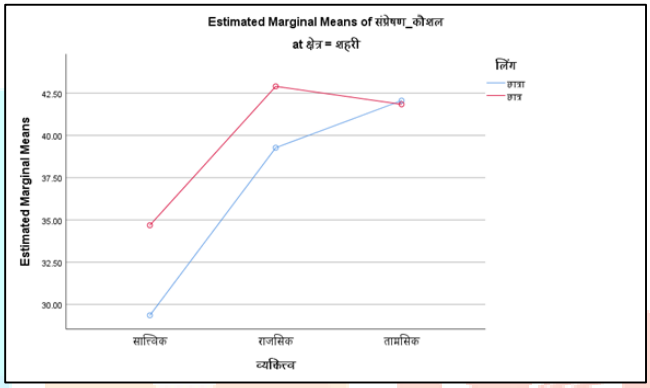

यह परिणाम पाया गया कि व्यक्तित्व, लिंग एवं क्षेत्र के मध्य सार्थक अन्तःक्रिया पायी गयी। जिसका एफ मूल्य = 7.38 (2,431) है जो सर्थाक्त स्तर 0.05 = 3.02 से अधिक है अर्थात् निर्मित शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है। निम्न प्रभाव के पीछे यह कारण हो सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र में वहां के वातावरण के कारण वहां रहने वाले नागरिकों के मध्य उच्च संबंध और उच्च संप्रेषण कौशल पाये जाते हैं जबकि शहरी वातावरण में निवास करने वाले विद्यार्थी वहां की स्थितियों के अनुसार वहां उच्च संप्रेषण कौशल का प्रदर्शन करते हैं पर तामसिक अवस्था में वे उच्च स्थिति को ज्यादा देर तक स्थिर नहीं रख पाते और निम्न स्थिति में रहने वाला लिंग अपनी पुरानी छवि को बदलने की चाह में उच्च स्थिति वाले निवासियों को चुनौती देकर आगे बढ़कर अपनी स्थिति को सुधारने का प्रयत्न करता है तब यह परिणाम सामने आते हैं।

निश्कर्श–

उपर्युक्त परिकल्पनाओं के विश्लेषण एवं उनसे प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह स्पष्ट है कि त्रिगुण व्यक्तित्व का सम्प्रेषण कौशल पर सार्थक प्रभाव पाया गया। परिणाम में यह भी पाया गया कि लिंग का सम्प्रेषण कौशल पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। अर्थात् छात्रों में छात्राओं की अपेक्षा सम्प्रेषण में श्रेष्ठ होने की अभिलाषा अधिक होती है। क्षेत्र का सम्प्रेषण कौशल पर सार्थक प्रभाव पाया गया। ग्रामीण विद्यार्थी, शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा सम्प्रेषण कौशल में निपुण थे। इसका सम्भावित कारण यह हो सकता है कि उनके पारिवारिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक सम्बन्ध अधिक प्रगाढ़ होते है जिसके कारण वे सम्प्रेषण कौशल में निपुण होते है।

सुझाव –

समाज के लिए सुझाव–

1 समाज को भावी पीढ़ी को उचित दिशा देने हेतु विद्यालय गतिविधियों पर सम्मिलित होना आवश्यक है।
4. बदलती परिस्थितियों के अनुसार समाज को भी अपने रीति रिवाजों में उचित बदलाव करना आवश्यक है।
5. समाज रचनात्मकता, व्यवस्थित जीवन शैली और सकारात्मक दिशा में किशोरों को अग्रसर करने का महत्त्वपूर्ण उपाय करे।

प्रशासन के लिए सुझाव –

1. प्रशासन ग्रेडिंग के महत्त्व को किशोरों को रचनात्मक ढंग से परिचय करवायें।
1. प्रशासन किशोरों के उज्जवल भविष्य हेतु प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाओं का आयोजन संभवतः नजदीकी क्षेत्रों में करवाये जिससे किशोरों को विभिन्न राज्यों में न भटकना पड़े।
2. प्रशासन समय–समय पर विद्यालयों का निरिक्षण कर समायोजित वातावरण निर्मित करने हेतु उचित सुझाव दे अथवा कोई अन्य योजना लागू करे।

शिक्षकों के लिए सुझाव –

1. प्राचार्य विद्यालय का वातावरण भयमुक्त बनाए रखे और यह भी ध्यान दे कि किशोरों के बीच कोई आपसी मनमुटाव न हो या उनके बीच कोई धमकी या डराने वाले छात्र–छात्रा की उपस्तिथि न हो।
2. विद्यालय में ध्यान योग एवं प्राणायाम जैसे सूक्ष्म एवं अन्य शारीरिक व्यायाम अवश्य करायें।
3. सात्विक प्रयत्नों एवं कार्यक्रमों को अवश्य लागू करें।
4. यदि भोजन की व्यवस्था में विद्यालय का प्रबंधन हो तो सात्विक भोजन एवं कार्यक्रम की प्रमुखता जरूर हो।

अनुकरणीय अध्ययन

प्रस्तुत शोध के अतिरिक्त कई अन्य शोध भी भविष्य में किये जा सकते हैं –

1. त्रिगुण व्यक्तित्त्व का किशोर अपराध एवं संगठनात्मक द्वन्द पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
2. त्रिगुण व्यक्तित्त्व का नेतृत्त्व क्षमता एवं संगठनात्मक द्वन्द पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
3. त्रिगुण व्यक्तित्त्व का अधिगम शैली एवं कार्य क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

- **Jyoti And Devi, Sharmila (.(2021**Career Choices of School Students In Relation To Their Social Competence, *Journal of Emerging Technologies And Innovative Research (Jetir), Volume 8, Issue 12*, Pp D -18D .23www.jetir.org
- **Nayak, Mamata (.(2014**Influence of Culture Linked Gender And Age On Social Competence of Higher Secondary School Adolescents, *International Journal of Humanities And Social Science Invention, Volume 3, Issue 10*, Pp. .39-31www.ijhssi.org
- **Peerzada, Dr. Najmah ((2018**A Study On Social Competence, Level of Aspiration And Academic Achievement of Higher Secondary School Students of District Pulwama (J&K India), *Research Review International Journal of Multidisciplinary, Volume-03* Issn:) 3085-2455Online) Issue-11, Pp .1011 -1007
- **Singh, Jyotsna And Ullah, Fariha Ishrat (.(2016**Personality Factors As Determinants of The Stress Experienced By The Adolescents, *The International Journal of Indian Psychology, Volume 4, Issue 1*, No. 83, Pp .58-47http://www.ijip.in
- **Singh, Mangal ((2016**A Study of Academic Achievement In Relation To Social Competence of Students In Government Senior Secondary Schools of Selected Districts of Punjab, *Online International Interdisciplinary Research Journal, Volume-Vi*, Page .228 -224www.oiirj.org
- **Supriya (.(2014**Social Competence of Senior Secondary School Students In Relation To Their Gender And Parenting Behaviour Style, *Journal of Emerging Technologies And Innovative Research (Jetir), Volume 9*, Issue 7, Pp F -57F .61www.jetir.org
- **Goel, Urmila ((2015.** A Study of Social Skills Of Sr. Secondary School Students In Relation To Their Gender, Locale And Type of Family. *Indian Journal of Applied Research, Volume: 5*, Issue: 4, Pp .836 -834
- Gaur, Kumud And Malik, Shashi (.(2018A Study of Social Competence And Academic Achievement, *Journal of Teacher Education And Research, Vol 13, No 2*, Https://www.myresearchjournals.com)
- **Nayak, Mamata (.(2014**Influence of Culture Linked Gender And Age On Social Competence of Higher Secondary School Adolescents, *International Journal of Humanities And Social Science Invention, Volume 3 Issue 10*, Pp. .39-31www.ijhssi.org
- **Shylaja C V (.(2018**A Study On Social Competence Of Secondary School Students Residing In Juvenile Homes, *Artha-Journal of Social Sciences, Vol. 17, No. 1*, .8-1Doi: /10.12724Ajss.1 44.1
- **Banerjee, Subir Kumar (.(2019**Relationship Between Social Behaviour And Academic Achievement of Students At Secondary Level In Hooghly District Of West Bengal, *Journal of Emerging Technologies And Innovative Research (Jetir), Volume 6, Issue 3*, Pp .514 -511www.jetir.org